KAIJOR18001H

KANZULIMAN
Academic International Journal on Razawiyāt
Multilingual ♦ Annual ♦ Peer-Reviewed ♦ Scholarly Online

Homepage: www.research.kanzuliman.org/ **Frequency:** 1 Volume per Year
Volume: First **Year:** 2019
Issue: Two (Hindi) **Email:** kaiojr.kanzuliman@gmail.com

3rd Nov. 2018 KAIOJR 1st National Conference on "Razawiyāt: An International Theology"

अहमद रज़ा खान रहमतुल्लाह अलैह का हिंदी काव्य में योगदान

मोहम्मद सैफ़ रज़ा खान

रिसर्च स्कालर, विभाग हिंदी, अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय, अलीगढ

ARTICLE INFO

Article history:
Received 27 October19
Revised 28 October 19
Accepted 2Nov 19

Keywords:
आला हज़रत का हिंदी में योगदान,
अध्धयन,मुहावरों के भंडार

ABSTRACT / सारांश

हिन्दी काव्य में रोहिल्खंड के कवियों विशेषकर सूफी संतो का अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। जिनमे एटा जिले के मारेहरा के युगपुरुशो विशेषकर सय्यद आले रसूल मरेहरवी के परिवार का विशेष योगदान रहा है और उन्ही के आशीर्वाद से उनके अध्यात्मिक दीपक अर्थात मौलाना अहमद रज़ा खान साहब को ये काव्य सृजन विरासत में प्राप्त हुआ है हिन्दी काव्य में आपकी दो रचनाये बहुत प्रसिद्ध हैं जिनका अध्यन इस शोध पत्र में किया गया है तथा साथ ही हिन्दी मुहावरों का भी प्रकाश आपकी रचनाओं से बिखरता हुआ दिखाई देता है आला हज़रत ने अपनी कवित्त–शक्ति और अपार ऊर्जा से हिंदी–काव्य और मुहावरों के भंडार भर दिए हैं। इनकी काव्य–प्रतिभा ने न केवल साहित्यकारों,समीक्षकों और पाठकों को आकर्षित हीं किया, बल्कि सर्जना और नवीन कल्पनाओं की प्रेरणा भी दी। परन्तु हिन्दी साहित्य में जानकारी के आभाव या संस्कृतिक द्वेष ने हमको अध्यन से रोक रखा है जिस के कारण हम सूफी विचारवादी संतो को और उनके द्वारा सृजन की रसमय काव्य स्मृति को समझने से दूर रहे अतः मुस्लिम लेखको के द्वारा इतिहास का पुनर्लेखन आवश्यक है।

DOI: 10.7910/DVN/2Y6JMB © 2019 . Hosting by KAIOJR ,All rights reserved.

प्रस्तावना

*इमाम अहमद रज़ा खां फ़ाज़िल बरेलवी (जन्म 14' जून 1856 बरेली, मृत्यु 28' अक्टू. 1921 बरेली यू.पी.), आलमे- इस्लाम में जिन्हें "आला हज़रत" कहा जाता है, किसी तआरुफ़ (परिचय) के मुहताज नहीं हैं। आपकी लिखी "फ़तवा-रिज़विया" किताब अलग-अलग मौकों पर दिये गये आपके फ़तवों का बहुत बड़ा संकलन है,जो कई जिल्दों में मौजूद है और आज भी न सिर्फ़ भारत बल्कि पूरी दुनिया में मुसलमानों के अंदरूनी मामलों का निपटारा करने में उसकी मदद न्यायालयों में भी ली जाती है। आपने एक हज़ार से ऊपर, अलग-अलग मौज़ू (विषय) पर किताबें लिखी हैं। आपको हिन्दी,उर्दू,अरबी,फ़ारसी, अंग्रेजी के साथ ही दीगर कई भाषाओं का भी इल्म (ज्ञान) था।वह एक साथ एक हाथ से एक भाषा और दूसरे हाथ से दूसरी भाषा में लिख लेते थे,ऐसा कहा जाता है।आपका आज़ादी की लड़ाई में भी रोल रहा है। आपका सबसे बड़ा काम कुरान-शरीफ़ का तर्जुमा (अनुवाद) "कंजुल-ईमान" है,जो लगभग हर मुसलमान के घर में मौजूद होता है। आपको एक "आशिके-रसूल" के रूप में भी याद किया जाता है। आप न सिर्फ़ एक आलिम थे, बल्कि एक मंजे हुए शायर भी थे। मगर आपकी शायरी में सिर्फ़ "इश्क़े-रसूल" ही पाया जाता है,जिसे नअ़त कहते हैं। इस फ़न में आपकी महारत को देखते हुए आपको "इमामुल-कलाम" (कलाम का इमाम) और "कलामुल-इमाम" (इमाम का कलाम) भी कहा जाता है। आपकी नाअ़तिया शायरी का संकलन "हदायके-बख़शिश" बहुत मशहूर है।

श्री अहमद रज़ा खान साहब ने सैकड़ों बरसों से इस्लाम सुनियत के मानने वाले सूफ़ी संतो की विचारधारा का पुनर्जनम किया हैं इसी कारण वश बरेलवियो को आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान के लगाव की वजह से लोग बरेलवी बोलते हैंभारत में इस्लाम के प्रचार व प्रसार में सूफ़ियों (इस्लामी मनीषियों) ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. इस्लाम के प्रसार में उन्हें काफी सफलता प्राप्त हुई, क्योंकि कई मायने में सूफ़ियों की विश्वास प्रणाली और अभ्यास भारतीय दार्शनिक साहित्य के साथ समान थी,मदीने के

* *Corresponding Author.* Tel.: +91-*8299557759*
Email: saifraza.alig94@gmail.com

Peer review under responsibility of Kanzuliman Foundation.

KAIJOR

DOI: 10.7910/DVN/2Y6JMB ©2019 Hosting by www.kanzuliman.org Kanzuliman Research Publications
. All rights reserved.
http://research.kanzuliman.org/volume-1-2019/

E-ISSN: APPLIED@23781 P-ISSN: APPLIED@RNI23782@2019025637

सिंहासन आसीन पैगंबर मोहम्मद साहब के दास,महाकवि–कोकिल श्री अहमद रज़ा खान ने अपने ईष्ट की प्रशंसा में बहुत कुछ लिख डाला है जिसमे हिंदी का अपना एक अलग स्थान है इस शोध पत्र में उनके काव्य ग्रन्थ में उपलब्ध हिंदी काव्य का व्यख्याहन किया गया है

प्रसिद्ध हिन्दी काव्य

तोरे देखन को तरसे जियरा या अब्द अल कादिर
कहो बित मोहे सपने में दरस दिखा या अब्द अल कादिर जिलानी
है औघट घाट मोरी नय्याया अब्द अल कादिर जिलानी
किरपा से अपनी पार लगा या अब्द अल कादिर जिलानी
सूरत अल्वी सीरत नबवी अल्लाहो जमीलूं के मजहर
है लैसा का मिस्ली चेहरा तेरा या अब्द अल कादिर जिलानी
ए मजहर ए कुल फनी फिल्लाह ए मजहर ए अतम बाक़ी बिल्लाह
ये शान तेरी अल्लाह अल्लाह या अब्द अल कादिर जिलानी
तन मन धन सब तो पे वारत हूँ और सारो सुहाग उतारत हूँ
शय्यां लिल्लाह की जपों माला या अब्दुल कादिर जिलानी
पत राख लो मोरी महाराजा या अब्दुल कादिर जिलानी
तुम मजहर शान ए रिसालत हो तुम मादिने जूदो सखावत हो
क्यों कर न कहूँ शय्यां लिल्लाह या अब्द अल कादिर जिलानी
छाये ग़म के कारे बदरा और बरसात है ग़म की बरखा
कही भीग न जाए मोरी चुनरिया या अब्द अल कादिर जिलानी
तोरे चरनन सीस नवावत हौं और नैनन नीर बहावत हौं
सुन अरज रजा की अन्नदाता या अब्द अल कादिर जिलानी

प्रसिद्ध बहुभाषीयकाव्य(लम याति नजीरुका) में हिन्दी का स्थान

(१) लम याति नजीरोका फी नाज़रीन मिस्ले तो न शुद पैदा जाना
जग राज़ को ताज तोरे सर सो है तुझ को शहे दो सरा जाना
(२) अलबहारो अला वाल मोजो तागा मन बे कसो तूफा होशुरवा
मजधार में हु बिगड़ी है हबा मोरी नय्या पार लगा जाना
(३) या शम्सो नज़रतीय इला लेली चू बा तयबा रसी अर्जे बुकुनी
तेरी जोत की झल झल जग में रची मेरी शब ने न दिन होना जाना
(४) लका बदरून फिल वाझ्हील अजमल खत हालय मह जुल्फ अब्रे अजल
तोरे चन्दन चन्द्र परो कुन्डल रहमत की भरन बरसा जाना
(५) आनाफी अताशिन वासखा का अतम ऐगेसुए पाकऐ अब्रे करम
बरसन हारे रिमझिम रिमझिम दो बूंद इधर भी गिरा जाना
(६) या क़फिलाती जेडी अज़लक रहमे बर हस्स्ते तिश्ना लबक
मोरा जी यरा लरजे दरक दरक तयबा से अभी न सुना जाना
(७) वाहन लिसुवेआतींन जहाब्त आं अहदे हुज़ूरे बार गहत
जब याद आबत मोहे कर न परत दरदा वोह मदीने का जाना
(८) अल्क्ल्बो सजीन वलहम्मु शुजुं दिल जार चुना ज़ा जेरे चुनुं
पत अपनी बिपत में का से कहूँ मेरा कौन है तेरे सिवा जाना
(९) अर्हू फ़िदाका फजिद हरमन यक शोला दीगर बरजन इश्का
मोरा तन मन धन सब फूंक दिया यह जान भी प्यारे जला जाना
(१०) बस खामए खाम नवाए रज़ा न ये तर्ज मेरी न ये रंग मेरा
इर्शदे अहिब्बा नातिक था नाचार इस राह पड़ा जाना

आला हजरत फज़िले बरेलवी की खासियतों में से एक खासियत यह भी है की उनके जैसे रूहानी शायर कोई नही हुआ, जहाँ लोग तुकबंदी को शेर-ओ-शायरी समझ लेते हैं वहीं रूहानियत की तह तक जाकर अल्फाजों का इनसे अच्छा इस्तेमाल शायद कहीं देखने को नही मिलता.

नीचे उनकी लिखी एक नात का मतलब अपने अनुसार लिखने की कोशिश की है, ज़रूरी नही है की हर अल्फाज़ का मतलब सही हो लेकिन शब्दों के मतलब ढूढ़-ढूढ़ कर लिखे है और कुछ अपने तरीके से

यह नात चार भाषाओं में लिखी गयी है अरबी, फारसी, खड़ी हिंदी, उर्दू .. और सबसे कमाल की बात मेरी नज़र में आजतक कोई ऐसी कबिता.शायरी नही आई जिसमे एक साथ कई भाषाएँ हो और उनका मलतब जादुई हो.

1 - लम याति नाजीरुका फी नज़रिन,
मिस्ले तो न शुद पैदा जाना
जग राज को ताज तोरे सर सो है,
तुझ को शाह-ए-दूसरा जाना

मेरी नज़रों ने आजतक आपसे कोई नही देखा, ना ही आप जैसा कोई दूसरा पैदा हुआ. इस दुनिया का ताज आपके सिर पर रखा गया और आपको ही दुसरे जहां का शाह बनाया गया.

2 - अल बेहरू अला वल मौजू तगा,
मन बेकस-ओ-तुफां होश रुबा
मंझधार में हूँ बिगड़ी है हवा,
मोरी नैय्या पार लगा जाना.

समुन्द्र ऊंचा होता जा रहा है और लहरें मेरे खिलाफ हैं, चारों तरफ से तूफ़ान से घिरा हूँ खुद को असहाय महसूस कर रहा हूँ , मंझधार में हूँ बिगड़ी है हवा, मोरी नैय्या पार लगा जाना.

3- या शम्शु नज़रति इला लैयली,
छो बा तैबा रसी अर्जे बुकुनी
तोरी ज्योत की झल झल जग में रची,
मेरी शब् ने ना दिन होना जाना.

ओ सूरज क्या तुमने मेरी रात देखि है, मतलब मैं किस हाल में अपने आका को याद करता हूँ, जब तुम तैबा जाओ तो मेरे हलात उन्हें बताना. इसी लाइन का एक और मतलब भी है.. ओ सूरज क्या तुमने उन्हें देखा है जिन्हें मैं याद करता हूँ, तुम तैबा जाओ तो उन्हें बताना की जिस रात की मैं बात कर रहा हूँ उनसे जगमगाते सितारों की चमक पूरे जहान में बसी हुई है, उस रात में ऐसा सुकून है की मेरी इस रात की कभी सुबह ना हो.

4- लाका बदरून फिल वाजहिल अजमल,
खत हाला-ए-माह जुल्फ़ अब्रे अजल
तोरे चन्दन चन्द्र पड़ो कुंडल
रहमत की भरन बरसा जाना

KAIJOR (2019) 44-47 © Kanzuliman Foundation 2019. All Rights are Reserved

E-ISSN: APPLIED@23781 P-ISSN: APPLIED@RNI23782@2019025637

जब मैं आपको देखता हूँ तो एक चौहदवी के चाँद की तरह खिला हुआ नज़र आता है, और ऐसा मालूम होता है की चाँद से नूर गिरने ही वाला है और तुम्हारे चन्दन की तरह महकते हुए चाँद जैसे चेहरे की चारों तरफ एक घेरा बना हुआ है(जैसा की चाँद के चारों तरफ कभी कभी बनता है).. उसी नूर से हमारे ऊपर भी रहमत की बारिश कर दीजिये.

5- अना फी अताशिउ वा सखाका अतम,
ए गेसुए पाक, ए अब्रे करम
बरसन हारे रिमझिम रिमझिम,
दो बूँद इधर भी गिरा जाना

मैं प्यासा हूँ और आप उदारता के जाम से लबालब भरे हुए, आपके यह जो बाल है यह दया की बारिश करने वाले बादल है.(उफ्फ्फ .. आपने देखा होगा जब बाल गीले होते है तो उनमे से पानी की कुछ बारीक बारीक बूंदे टप-टप करके गिरती रहती है, बालों की संज्ञा दी गयी बादलों की और खुद को प्यासा). फिर उसके बाद ... बरसन(बादल) हारे रिमझिम-रिमझिम.. दो बूंद इधर भी गिरा जाना.

इस नात के केवल प्रारंभिक हिस्से का व्याख्यान अपने प्रसंग को स्वतः ही स्पष्ट कर रहा है इसलिए यह व्याख्यान केवल सन्दर्भ के लिए ही प्रस्तुत है क्योंकि पूरे काव्य का व्याख्यान शोध पत्र को जटिल व दीर्घ कर देगा अतः समयाभाव में इस पर विस्तार से चर्चा करना संभव नहीं है।

प्रसिद्ध हिन्दी मुहावरों का प्रयोग

(१०) मांगता का हाथ उठते ही मौला की देन थी
दूरी कुबूल ओ अर्ज़ में बस हाथ भर की है

<u>हाथ भर की दूरी होना</u>

(२) दुनिया को तू क्या जाने यह विष की गांठ है हराफा
सूरत देखो जालिम की तो कैसी भोली भाली है

<u>विष की गांठ</u>(जहर की पुड़िया)

(३) जुगनू चमके पता खड़के मुझ तन्हा का दिल धड़के
डर समझाए कोई पवन है या अगिया बेताली है

<u>अगियाबेतालीहै</u>(भूत प्रेत)

(४) आंख से काजल साफ चुरा लें ये वो चोर बला के हैं
तेरी गठरी ताके है और तूने नींद निकाली है

<u>आंख से काजल चुराना</u> (धोखा देना)

प्रसिद्ध फतावा रजविया में हिन्दी का प्रयोग

यह बात तो सर्व विदित है कि आप की गृह कार्य एवं फतवा देने की आधिकारिक भाषा उर्दू ही थी अपितु आला हज़रत ने पद के अलावा गद्य में भी हिंदी साहित्य की सेवा की है उदाहरणार्थ फतावा रजविया के अध्यन से दो बाते संज्ञान में आती हैं जो इस दावे के लिए पर्याप्त हैं
१ . फतावा रजविया में उर्दू शब्द इबादत के स्थान पर हिंदी शब्द पूजा का प्रयोग करना
२ . फतावा रजविया में दिशाओं के लिए प्रयोग होने वाले उर्दू शब्दो अर्थात मशरिक, मग़रिब शुमाल जुनूब के स्थान पर हिंदी शब्दो का पूरब पक्षिम उत्तर दक्षिण का प्रयोग करना

फतावा ए रज़विया शरीफ में प्रयोग किए गए मुख्य हिंदी शब्द

१ घुंडी
२ अंगुशतरी
३ किवाड़
४ संदूक ची
५ आंचल पल्लू
६ गोट
७ कुंडा
८ लंचे पिट्ढे
९ जूते की अड्डी
१० बेल बुटे
११ पगड़ी
१२ कटोरे
१३ छड़ी
१४ नंग
१५ घटियापन
१६ सिंगार
१७ महनाल
१८ आईना
१९ दमची
२० किले
२१ कलाबतू
२२ चेचक
२३ बांगड़ी
२४ उंगली
२५ पल्लू
२६ अंगरच्छे
२७ पूरब
२८ पश्चिम
२९ उत्तर
३० दक्षिण
३१ पूजा

KAIJOR (2019) 44-47 © Kanzuliman Foundation 2019. All Rights are Reserved

E-ISSN: APPLIED@23781 P-ISSN: APPLIED@RNI23782@2019025637

REFERENCES

1. हदायिक ए बख्शिश
2. Al-Ataya an-Nabawiyyah fil Fatawa ar-Ridawiyyah (Bestowal of Prophetic blessings in Razvi rulings) by Ala Hazrat Imama Ahmad Raza
3. पीएचडी थीसिस "अहमद रज़ा खान की नतिया शायरी

KAIJOR (2019) 44-47 © Kanzuliman Foundation 2019. All Rights are Reserved